बच्चों के पत्र, ईश्वर के नाम

एक स्कूल के शिक्षकों ने छोटी कक्षाओं के बच्चों को ईश्वर के नाम पत्र लिखने को कहा। वे जानना चाहते थे कि आखिर बच्चे ईश्वर से क्या माँगते या पूछते हैं और उनके इस माँगने या पूछने का अन्दाज़ क्या है? उनमें से कुछ पत्र...

प्रिय ईश्वर,

क्या लड़के, लड़कियों से अच्छे होते हैं? मैं जानती हूँ कि तुम लड़के हो। फिर भी, ठीक-ठीक बतलाना।

– एलिज़ाबेथ

प्रिय ईश्वर

क्या तुम अपना सारा काम अपने फरिश्तों से करवाते हो? मेरी माँ कहती है कि हम बच्चें तुम्हारे छोटे-छोटे फरिश्ते हैं और हमें घर का सारा काम करना चाहिए, झाड़ू भी लगाना चाहिए।

पत्र का जवाब ज़रा जल्दी देना।

– तुम्हारा विली

प्रिय ईश्वर,

मुझे वैज्ञानिक कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। तुमने तो विज्ञान की बड़ी अजीब-अजीब चीज़ें बनाई हैं। वे सब तुम्हें कहाँ से सूझीं?

– तुम्हारा जिम्मी

प्रिय ईश्वर

गिरजाघर जाना वैसे तो ठीक है पर तुम क्या वहाँ ज़रा ज़्यादा अच्छे संगीत का इन्तज़ाम नहीं कर सकते? आशा है तुम इस बात का बुरा नहीं मानोगे। क्या तुम कुछ नए गीत नहीं लिख सकते? पादरी से उन्हीं पुराने गीतों को सुनते-सुनते अब ऊब-सी होने लगी है।

– तुम्हारा दोस्त हैरी

प्रिय ईश्वर

तुमने मुझे मम्मी-डैडी दिए हैं। इसके लिए मैं तुम्हारा धन्यवाद करती हूँ। तुम्हें मैं इसलिए भी धन्यवाद देती हूँ कि तुमने हमें खेलने के लिए कुत्ते, मछलियाँ और दूसरे बच्चे भी दिए हैं। यह सब देखने के लिए तुमने हमें आँखें भी दीं, उसके वास्ते भी शुक्रिया।

– मैक्सिम

प्रिय ईश्वर

पिछले सप्ताह की बारिश में हमारे घर की एक दीवाल गिर गई। उसकी मरम्मत के लिए हमारे पास पैसे नहीं हैं। तुम्हारे पास तो अच्छे मिस्त्री ज़रूर होंगे। उन्हें भेजकर यह काम ज़रूर करा देना। जल्दी।

– तुम्हारा जोज़फ

प्रिय ईश्वर

हम शुक्रवार को दो हफ्ते के लिए छुट्टियों पर जा रहे हैं। सो हम चर्च नहीं आ सकेंगे। मैं आशा करती हूँ कि हमारे लौटने पर तुम वहीं चर्च में होगे। तुम्हारी छुट्टियाँ कब होती हैं?

– डोनी

प्रिय ईश्वर महोदय

जो लोग आपको मानते नहीं हैं, उनके बारे में आप क्या सोचते हैं? यह बात मैं और मेरे दोस्त जानना चाहते हैं।

– आपका नील

प्रिय ईश्वर

मैं एक गरीब बालक हूँ। मेरे पिता बढ़ई हैं। माँ हेनरी साहब के बगीचे की देखभाल करती है। वे दोनों मुझे मुश्किल से पढ़ा रहे हैं। मुझे आइसक्रीम अच्छी लगती है। हमारे घर से कुछ दूर पहाड़ों पर बर्फ जमी रहती है। क्या ही अच्छा हो, तुम उस बर्फ को आइसक्रीम में तब्दील कर दो। मैं आज तक आइसक्रीम के पैसों का इन्तज़ाम नहीं कर पाया। आइसक्रीम के पहाड़ से मैं मनचाही आइसक्रीम खा सकूँगा।

– तुम्हारा आर्थर

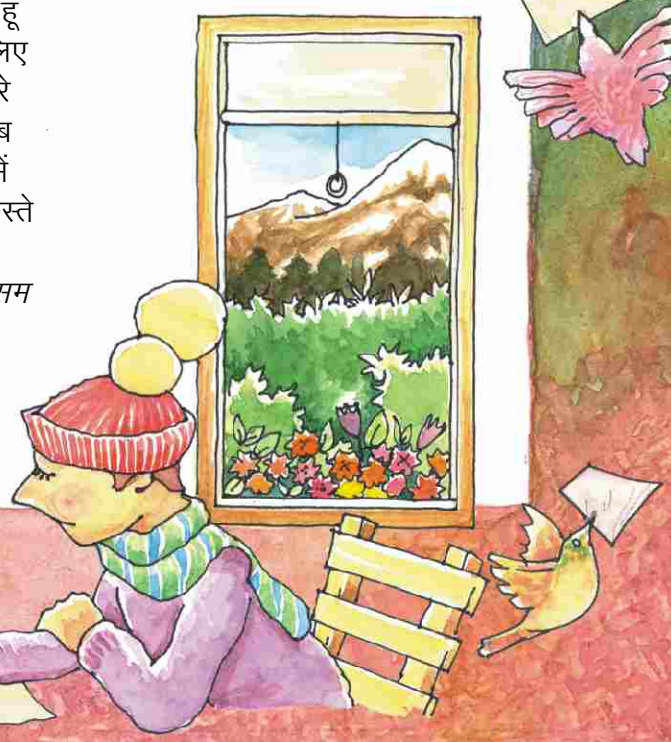

प्रस्तुतिः कैलाश नारद

स्रोतः अननोन सोर्सेज़ ऑफ लाफ्टर